मध्यप्रदेश में कांग्रेस के लिए सबसे चुनौती पूर्ण है इंदौर लोकसभा सीट

मिलिंद मुजुमदार

इंदौर. मध्यप्रदेश में कांग्रेस के लिए इंदौर जिला और लोकसभा सीट सबसे बड़ी चुनौती बनकर सामने आए हैं. पिछले लगभग 33 वर्षों से इंदौर में भाजपा ने लगातार चुनावी सफलताएं अर्जित की हैं. विधानसभा चुनाव में 1998 का विधानसभा चुनाव छोड़ दिया जाए तो 90 के बाद से सभी विधानसभा चुनाव में जिले में भाजपा को कांग्रेस से अधिक सीटें मिलती रही हैं. 2018 के विधानसभा चुनाव में जहां प्रदेश में कांग्रेस ने अल्पमत की सरकार बनाने में सफलता प्राप्त की थी, वही इंदौर जिले में वह भाजपा से पीछे थी.

इंदौर जिले में भाजपा जिला पंचायत और इंदौर नगर निगम दोनों चुनाव में पिछले 5 बार से लगातार सफलता प्राप्त कर रही है. जनपद सदस्य और सरपंचों के मामले में भी भाजपा कांग्रेस के मुकाबले कहीं आगे रहीं. इंदौर जिले में संघ परिवार का नेटवर्क भी बहुत मजबूत है जिसका लाभ भाजपा को मिलता ही है. इंदौर नगर निगम में सन 2000 में पहली बार मेयर के चुनाव प्रत्यक्ष जनता द्वारा किए गए थे. उन चुनावों में कैलाश विजयवर्गीय जनता द्वारा निर्वाचित पहले महापौर बने थे. इसके बाद 2005 में डॉ उमा शशि शर्मा निगम महापौर का चुनाव जीती, उन्होंने कड़े संघर्ष में शोभा ओझा को लगभग 13000 मतों से हराया था. 2010 में कृष्ण मुरारी मोघे को भाजपा ने उम्मीदवार बनाया, जिन्होंने कांग्रेस के पंकज संघवी को लगभग 3500 मतों से हराया था. यह कांग्रेस की नगर निगम चुनाव में सबसे नजदीकी हार थी अन्यथा 2015 के चुनाव में मालिनी गौड़ और 2023 के चुनाव में पुष्यमित्र भार्गव ने भारी अंतर से कांग्रेस के प्रत्याशियों को पराजित किया है.

5 बार से नगर निगम और जिला पंचायत पर भाजपा का कब्जा

1998 के विधानसभा चुनाव को छोड़कर कभी भी भाजपा को पीछे नहीं छोड़ सकी कांग्रेस

जिला पंचायत के चुनाव में भी यही स्थिति रही. भाजपा की ओर से रामकरण भाबर, कैलाश पाटीदार, ओम परसावदिया, कविता पाटीदार और रीना मालवीय (मौजूदा अध्यक्ष) जिला पंचायत अध्यक्ष निर्वाचित हुई हैं. भाजपा ने त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में जनपद और जिला पंचायत प्रतिनिधियों के साथ ही ग्राम पंचायतों के चुनाव में भी भारी सफलताएं प्राप्त की हैं. 2 वर्ष पूर्व हुए पंचायत चुनाव में भाजपा ने जिले में चारों जनपद अध्यक्ष बनाने में सफलता प्राप्त की थी. इसी तरह नगर निगम के वार्डों के चुनाव में भी भाजपा को भारी अंतर से जीत मिली है. भाजपा ने पिछले

5 बार से 50 से अधिक पार्षद निर्वाचित करवाने में सफलता प्राप्त की है. 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने सांवेर, देपालपुर, राऊ और क्षेत्र क्रमांक 1 में जीत हासिल की थी. जबकि भाजपा को महू, क्षेत्र क्रमांक 2, 3, 4 और 5 में जीत मिली थी. बाद में जुलाई 2020 में हुए सांवेर विधानसभा के उपचुनाव में कांग्रेस के प्रेमचंद गुड्डू भाजपा के तुलसी सिलावट से हार गए थे इस तरह भाजपा विधायकों की जिले में संख्या बढ़कर 6 हो गई. इंदौर जिले में 9 विधानसभा क्षेत्र हैं. जिले का महू विधानसभा क्षेत्र धार लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आता है. 1990 के बाद हुए विधानसभा चुनाव में केवल 1998 का चुनाव ऐसा था जब कांग्रेस को जिले से 8 में से 6 विधानसभा सीटें जीतने में सफलता प्राप्त हुई थी. उस समय भाजपा की ओर से क्षेत्र क्रमांक 2 से कैलाश विजयवर्गीय और क्षेत्र क्रमांक 4 से लक्ष्मण सिंह गौड़ विजय हुए थे. अन्यथा 1990 के बाद जितने भी चुनाव हुए इंदौर जिले में भाजपा का वर्चस्व स्पष्ट रूप से दिखा. जाहिर है कांग्रेस के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती इंदौर के भाजपा के गढ़ को तोड़ना होगी.

2023 के विधानसभा चुनाव में भी भाजपा ने इंदौर जिले की सभी नौ विधानसभा सीटों पर जीत दर्ज की है. भाजपा ने इस बार 2019 में जीते शंकर लालवानी को रिपीट किया है तो कांग्रेस की ओर से एक निजी कॉलेज के संचालक अक्षय कांतिलाल बम को मैदान में उतारा गया है. इंदौर लोकसभा सीट पर 13 मई को मतदान होना.

इंदौर की सामाजिक संरचना भाजपा के अनुकूल

औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्र होने के कारण यहां शहरी मतदाताओं की संख्या बहुत अधिक है . आमतौर पर देश के शहरी मतदाता परंपरागत रूप से भाजपा को पसंद करते हैं . इंदौर लोकसभा सीट पर लगभग 62 फ़ीसदी मतदाता शहरी और 38 फ़ीसदी मतदाता ग्रामीण हैं . ग्रामीण मतदाताओं में बड़ी संख्या में पाटीदार, कुर्मी, लोधी, कुशवाहा, राजपूत मतदाता हैं जो संघ परिवार से जुड़े हुए हैं . यह मतदाता भाजपा के कोर वोटर माने जाते हैं . इसी तरह इंदौर शहर में मराठी मतदाताओं की संख्या दो लाख से ऊपर है जो आमतौर पर भाजपा के पक्ष में मतदान करते हैं . इनके अलावा राजस्थानी और गुजराती मतदाता भी आमतौर पर भाजपा को मत देते हैं . जैन,अग्रवाल नीमा, पोरवाल जैसे वैश्य मतदाता, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ब्राह्मण भी आमतौर पर भाजपा को ही वोट देते हैं . इसलिए इंदौर की सामाजिक संरचना भाजपा के अनुकूल मानी जाती है . कांग्रेस के लिए लोकसभा और मेयर के चुनाव में जीतना असंभव की सीमा को स्पर्श करता मुश्किल कार्य है लेकिन विधानसभा में स्थानीय नेताओं के बल पर कांग्रेस अच्छा प्रदर्शन करती है .

किन मुद्दों को आधार बनाकर दिल्ली जीतना चाहती है बीजेपी?

राजनीति का पूरा गेम प्लान

नई दिल्ली. भारतीय जनता पार्टी राजधानी दिल्ली सभी सात सीटों पर जीत हासिल करने के लिए पूरे प्लान के साथ चुनाव मैदान में उतरी है. दिल्ली में स्थानीय राजनीति में आम आदमी पार्टी मजबूत है और कांग्रेस के साथ गठबंधन ने बीजेपी के लिए मुश्किलें खड़ी दी है. इसके बावजूद बीजेपी एक बार फिर से लोकसभा की सभी सातों सीटों पर जीत हासिल करना चाहती है और इसके लिए पार्टी एक साथ कई स्तरों पर काम कर रही है.

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के जेल जाने के बाद दिल्ली में सरकार के कामकाज को लेकर संकट खड़ा हो गया है, केजरीवाल जेल से सरकार चलाने की बात कह चुके हैं. लेकिन, इसकी कटु आलोचना करने के बावजूद बीजेपी राष्ट्रपति शासन लगाने की संभावना को सिरे से नकार रही है. दरअसल, बीजेपी एक रणनीति के अनुसार केजरीवाल के जेल से सरकार चलाने के फैसले को भ्रष्टाचार और नैतिकता से जोड़ते हुए न केवल दिल्ली के मतदाताओं को एक संदेश देना चाहती है बल्कि पार्टी को यह भी लग रहा है कि केजरीवाल जितने दिन जेल में रहकर मुख्यमंत्री बने रहेंगे, आम आदमी पार्टी के नेताओं के बीच उतने ही अंतर्विरोध उजागर होते जाएंगे.

नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता

हालांकि, दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता को लेकर भी बीजेपी पूरी तरह से आश्वस्त है . बीजेपी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने शुक्रवार को दावा किया कि जिस दिल्ली में अरविंद केजरीवाल लगातार सीएम बन रहे हैं, उसी दिल्ली की जनता ने 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में सभी सातों सीटों पर बीजेपी को विजयी बनाया था . बीजेपी का यह भी दावा है कि दिल्ली में आप और कांग्रेस के मिलकर चुनाव लड़ने के बावजूद नतीजों पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि 2019 के पिछले लोकसभा चुनाव में बीजेपी को अकेले 57 प्रतिशत के लगभग मत मिले थे, जो कि इन दोनों दलों को मिले वोट से भी कहीं ज्यादा था .

राजमहल से होती थी बस्तर की राजनीति

दो दशक तक रहा भाजपा का राज, अब किसके सिर सजेगा ताज

कवासी लखमा | महेश कश्यप

रायपुर. बस्तर लोकसभा सीट छत्तीसगढ़ की महत्वपूर्ण सीटों में से एक मानी जाती है. वर्ष 1951 से पहले लोकसभा चुनाव से लेकर वर्ष 1996 तक यह कांग्रेस की परंपरागत सीट हुआ करती थी, लेकिन साल 1996 में पहली बार यहां के लोगों ने निर्दलीय प्रत्याशी को चुना. वर्ष 1998 से लेकर 2014 तक इस सीट पर बीजेपी का कब्जा रहा. यह सीट अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है.

यह सीट वर्ष 1952 में पहली बार अस्तित्व में आई थी. यहां से दीपक बैज कांग्रेस के मौजूदा सासंद हैं. साल 2019 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लहर के बावजूद उन्होंने जीत दर्ज की थी. दीपक बैज विधानसभा चुनाव 2023 में चित्रकोट से चुनाव हार गए थे. वर्तमान में वो पीसीसी चीफ हैं. बीजेपी ने इस बार कांग्रेस प्रत्याशी कवासी लखमा को टक्कर देने के लिए बस्तर से महेश कश्यप को चुनावी मैदान में उतारा है. बीजेपी के वरिष्ठ नेता बलिराम कश्यप यहां से लगातार 4 बार (1998 से 2009) सांसद रहे.

वर्ष 2011 और 2014 में बीजेपी के दिनेश कश्यप यहां से सांसद बने. इस सीट पर पिछले डेढ़ दशक तक कश्यप परिवार का दबदबा रहा. वर्ष 2014 में बीजेपी के दिनेश कश्यप ने यहां से जीत हासिल की थी. उन्होंने कांग्रेस के दीपक कुमार को हराया था.

छह बार के विधायक हैं कवासी लखमा- छह बार विधायक कवासी लखमा सुकमा जिले के ग्राम नागारास के निवासी हैं. साल 1953 में जन्में लखमा साक्षर हैं. अविभाजित मध्य प्रदेश में पंच के चुनाव से राजनीति में कदम रखने वाले 71 वर्षीय लखमा किसान परिवार से हैं.

सीपीआई और बसपा ने भी उतारे हैं प्रत्याशी- बस्तर सीट से सीपीआई ने फूलसिंह कचलाम और बसपा ने आयतुराम मंडावी को अपना प्रत्याशी बनाया है. दोनों नामांकन भी कर चुके हैं. हालांकि चुनावी रण में मुख्य मुकाबला कांग्रेस और बीजेपी प्रत्याशी के बीच होगा.

पहली बार चुनाव लड़ रहे महेश कश्यप

भाजपा प्रत्याशी महेश कश्यप पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं . विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के सक्रिय सदस्य और इन संगठनों में विभिन्न पदों पर काम कर चुके हैं . महेश कश्यप ने कक्षा दसवीं तक की पढ़ाई की है . जगदलपुर ब्लॉक के ग्राम कलचा के निवासी 48 वर्षीय महेश 1996 में बजरंग दल के जिला संयोजक बने थे .

महायुति में 7 सीटों पर पेंच

शिवसेना के मौजूद 3 सांसदों केटिकट काटने के बाद बढ़ी बैचेनी

मुंबई. महाराष्ट्र के सत्ताधारी महायुति गठबंधन में अभी तक 7 सीटों पर अभी भी कोई फार्मूला तय नहीं हो सका है. उससे टिकट दावेदारों की बेचैनी बढती जा रही है.

खासकर शिवसेना ने जिस तरह से तीन मौजूदा सांसदों के टिकट काटे हैं, उससे हताशा और बढ़ गई है. एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा बेचैनी मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना में नजर आ रही है. क्योंकि, जिन 7 सीटों पर भाजपा, शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी में डील पक्की नहीं हो पाई है, उनमें सीटों पर पिछली बार संयुक्त शिवसेना ही जीती थी. सूत्रों के मुताबिक शिवसेना के कुछ टिकट दावेदारों ने अनिश्चितता के बावजूद अपना

चुनाव प्रचार शुरू कर दिया है.

दरअसल, शिवसेना ने यवतमाल वाशिम से भावना गवली, हिंगोली से हेमंत पाटिल और रामटेक से कृपाल तुमाने जैसे मौजूदा सांसदों का टिकट काट दिया है. इसी तरह से पार्टी सूत्रों का कहना है कि मुंबई-नॉर्थ-वेस्ट से पार्टी सांसद गजानन कीर्तिकर को भी टिकट मिलने की संभावना कम है.

2019 में संयुक्त शिवसेना ने जीती थी 6 सीटें- महायुति गठबंधन मं जिन सात सीटों पर अभी तक सीट-शेयरिंग का फॉर्मूला तय नहीं हो पाया है, उनमें रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग, मुंबई साउथ, औरंगाबाद, नासिक, पालघर, ठाणे और सतारा शामिल है. इनमें से 6 सीटें 2019 में संयुक्त शिवसेना ने जीती थीं, लेकिन पार्टी सूत्रों केअनुसार अब इनमें से मुख्य रूप से बीजेपी बड़ी दावेदारी जता रही है. मुंबई नॉर्थ-सेंट्रल सीट भी फॉर्मूले के तहत भाजपा को दी गई है, लेकिन अभी वहां उम्मीदवार की घोषणा नहीं हुई है. दूसरी तरफ विपक्षी महा विकास अघाड़ी (कांगेस, शिवसेना-यबीटी, एनसीपी-शरदचदं पवार) ने डील तय कर ली है, लेकिन, इसने भी मबुंई नॉर्थ, मुंबई नॉर्थ-सेंट्रल (दोनों कांगेस) मेंन नाम तय नही किए हैं

मंत्री सामंत के भाई भी दावेदार

दूसरी तरफ शिवसेना एमएलए और राज्य के उद्योग मंत्री उदय सामंत के बड़े भाई किरन सामंत भी इस सीट पर दावेदार हैं और उन्होंने चुनावों के हिसाब से तैयारियां भी शुरू कर दी है . इसी तरह से मुंबई साउथ को लेकर भी भाजपा-शिवेसना में सुलह का रास्ता नही निकल पा रहा है . दक्षिण मुंबई की इस प्रतिष्ठित सीट पर विधानसभा के स्पीकर राहुल नार्वेकर ने एक महीने पहले से ही अभियान शुरू कर दिया था . इस पर एक और दावेदार शिवसेना के नए-नवेले राज्यसभा सांसद मिलिंद देवड़ा भी हैं, जिनकी दावेदारी यहां से पहले सांसद होने की वजह से है .

रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग पर नारायण राणे के लिए अडंगा- तटवर्ती रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग सीट से संयुक्त शिवसेना के विनायक राउत जीते थे, जो इस बार उद्धव गुट से उम्मीदवार हैं. भाजपा चाहती है कि यह सीट उसे मिले जहां पर वह उद्धव के कटु आलोचक केंद्रीय मंत्री नारायण राणे को उतार सके.

औरंगाबाद, पालघर में भी असमंजस्य- मराठवाड़ा की औरंगाबाद सीट पर भी दोनों पार्टी दावा कर रही है तो पालघर में भी यही हाल है. सतारा सीट पर भाजपा और एनसीपी की दावेदारी जारी है.

ठाणे और कल्याण पर शिंदे गुट का दावा

- भाजपा ठाणे और कल्याण दोनों सीट पर दावेकर रही थी . जबकि, सीएम शिंदेकी पार्टी ये दोनों ही सीटें छोड़ने को तैयार नहीं है .
- पिछले हप ते उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस ने कल्याण सीट पर मुख्यमंत्री के बेटे और मौजूदा सांसद श्रीकांत शिंदे की उम्मीदवारी घोषित कर दी . ठाणे मुख्यमंत्री शिंदे का गढ़ है .
- इसलिए बहुत कम संभावना है कि सीएम के गढ़ को वह भाजपा के लिए छोड़ देगी . इसी तरह से नासिक सीट पर भी मामला फंसा है .
- दो बार के सांसद हेमंत गोडसे ने प्रचार शुरू भी कर दिया है, जबकि एनसीपी इसे अपने दिग्गज छगन भुजबल के लिए चाह रही है .

आदिवासी सीटों पर खास फोकस कर रही है कांग्रेस

जीतू पटवारी | भंवर जितेंद्र सिंह

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और प्रदेश प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह की जोड़ी का खास फोकस प्रदेश की 6 आदिवासी सीटें हैं . प्रदेश में मंडला, शहडोल, बैतूल, खरगोन, धार और रतलाम - झाबुआ ऐसी छह लोकसभा सीटें आदिवासियों के लिए आरक्षित है . इनमें तीन मालवा निमाड़ अंचल में आती है . मालवा और निमाड़ अंचल के आदिवासी सीटों पर भारत आदिवासी परिषद और जयस यानी जय आदिवासी युवा संगठन का काफी प्रभाव है . प्रदेश कांग्रेस की कोशिश है कि आदिवासी परिषद और जयस कांग्रेस को समर्थन दे . विधानसभा चुनाव में जयस ने कांग्रेस का समर्थन किया था, जिसके कारण उसे आदिवासी सीटों में सफलता मिली थी . यह काम वह लोकसभा चुनाव में भी करना चाहती है . इसके लिए जीतू पटवारी के अलावा विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और रतलाम से पार्टी प्रत्याशी कांतिलाल भूरिया प्रयासरत हैं . जयस और आदिवासी एकता परिषद का प्रभाव धार, खरगोन, खंडवा और बैतूल सीट पर अधिक है . दोनों संगठन लंबे समय से काम कर रहे हैं . आदिवासियों के हितों की लड़ाई के लिए सामाजिक और वैचारिक संगठन के रूप में इनका गठन किया गया था . जयस से जुड़े कांग्रेस विधायक हीरालाल अलावा का सार्वजनिक रूप से बार-बार कहना है कि हमारा संगठन सामाजिक है, लोकसभा चुनाव में हम कांग्रेस के साथ हैं .

कारण, कांग्रेस के घोषणा पत्र में आदिवासियों के हित में कई वादे किए गए हैं . सबसे प्रमुख तो यह कि राहुल गांधी ने हाल ही में मंडला में संविधान की पांचवी और छठवीं अनुसूची लागू करने की बात कही है . पांचवी अनुसूची में मध्य प्रदेश भी शामिल है . इसके लागू होने पर पर प्रशासन के कई अधिकार कलेक्टर की जगह आदिवासियों की समितियों को मिल जाएंगे .

जयस में भी मतभेद हैं

हालांकि, खुद को जयस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बताने वाले लोकेश मुजाल्दा का कहना डॉ हीरालाल अलावा से अलग है . उन्होंने कहा है कि भाजपा और कांग्रेस दोनों उनके हितों पर ध्यान नहीं दे रही हैं, इस कारण उनका संगठन ऐसे उम्मीदवारों का समर्थन करेगा जो आदिवासी हितों की बात करे . कांग्रेस जयस के दोनों गुटों को अपने पक्ष में करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है .

खरगोन में आदिवासी एकता परिषद कांग्रेस के साथ

कांग्रेस ने आदिवासी मतदाताओं को साधने के लिए बड़ी चाल चली . पूर्व सेल्स टैक्स अधिकारी को यहां से मैदान में उतारा है . वह आदिवासी एकता परिषद के साथ मिलकर काम कर रहे थे . परिषद 1992 से यहां सामाजिक कार्य कर रही है, जिससे उसकी आदिवासियों के बीच अच्छी पैठ है . संगठन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल रावत ने कहा कि यह सामाजिक और वैचारिक संगठन है, मुद्दों को लेकर अभी कांग्रेस के साथ है . संगठन मालवा-निमाड़ की सभी सीटों पर लंबे समय से काम कर रहा है .

विशेष | भाजपा ने बनाई रणनीति, दिग्गज नेताओं का छिंदवाड़ा में डेरा

कमलनाथ के गढ़ को भेदने में जुटा भाजपा का केन्द्रीय और राज्य नेतृत्व

नकुलनाथ | बंटी साहू | कमलनाथ

अजय ब्रम्हवंशी

छिंदवाड़ा . कमलनाथ के गढ़ को भेदने के लिए केन्द्र से लेकर राज्य का नेतृत्व लगा हुआ है . लोकसभा चुनाव में कमलनाथ को घेरने के लिए भाजपा ने अपनी रणनीति बनाई है जिसके अनुसार छिंदवाड़ा में दिग्गज नेताओं ने डेरा डाल रखा है . वहीं इस चुनाव में कमलनाथ और उनके पुत्र नकुलनाथ जिले भर में ताबड़तोड़ जनसभा को संबोधित कर रहे है . वही भाजपा का केन्द्रीय और राज्य का नेतृत्व भी जन सभा और रोड़ शो कर मतदाताओं को साधने में जुटा है . इस लोकसभा चुनाव में छिंदवाड़ा संसदीय सीट से कमलनाथ के पुत्र नकुलनाथ कांग्रेस प्रत्याशी है और भाजपा के बंटी विवेक साहू मैदान में है . छिंदवाड़ा **कमलनाथ का गढ़ माना जाता है, यहा पर कमलनाथ पूर्व में सांसद रह चुके है . सन 2019 के विधानसभा चुनाव में कमलनाथ प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे जिसके चलते कमनाथ ने छिंदवाड़ा विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा था और उपचुनाव में भाजपा के बंटी विवेक साहू को हराया था .**

2024 के विधानसभा चुनाव में भी कमलनाथ ने छिंदवाड़ा विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा और भाजपा के बंटी विवेक साहू को लगभग 40 हजार मतों से हराया था . दो बार कमलनाथ से विधानसभा चुनाव में हारने के बाद भी भाजपा ने लोकसभा चुनाव में बंटी विवेक साहू को अपना प्रत्याशी बनाया है . अब भाजपा के बंटी विवेक साहू कमलनाथ के पुत्र नकुलनाथ के प्रतिद्वंदी है . इस समय छिंदवाड़ा लोकसभा सीट किसी युद्ध के कम प्रतीत नही हो रहा है, यहां आरोप और प्रत्यारोप के तीखे शस्त्र चल रहे है . आप को बता दे कि इस लोकसभा चुनाव में कमलनाथ का नाम कांग्रेस की स्टार प्रचारक की सूची में है लेकिन भाजपा ने ऐसी रणनीति तैयार की है कि कमलनाथ को छिंदवाड़ा में ही बांध दिया है वे छिंदवाड़ा में अपने पुत्र नकुलनाथ के लिए प्रचार कर रहे है . कमलनाथ ने अन्य लोकसभा सीटों का कम ही दौरा किया है . वहीं भाजपा का केन्द्रीय और राज्य का नेतृत्व भी छिंदवाड़ा में आम सभा और रोड शो कर जिले के मतदाओं को साधने में जुटा हुआ है . अब आने वाला समय ही बताएगा कि भाजपा को छिंदवाड़ा लोकसभा सीट में विजय मिलती है या एक बार फिर हार का सामना करना पड़ेगा . छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से भाजपा एक बार ही जीत पाई है वह भी यह सीट भाजपा के पास एक वर्ष ही रही थी .

भाजपा की रणनीति से अकेले हुए कमलनाथ- राजनीतिज्ञों की माने तो लोकसभा चुनाव में केन्द्रीय और राज्य के नेतृत्व ने कमलनाथ के गढ़ को भेदने का हर संभव प्रयास किया था कि सफलता नही मिल पाई थी इस बार भाजपा ने अलग ही रणनीति तैयार किया है . भाजपा की रणनीति इस समय काम भी कर रही है . भाजपा की रणनीति के अनुसार कांग्रेस के कई नेताओं ने कांग्रेस का दामन छोड़ दिया है और भाजपा का दामन थाम लिया है . एक के बाद एक कांग्रेस के दिग्गज नेता कमलनाथ का साथ छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए है जिससे कमलनाथ अकेले दिखाई दे रहे है . लेकिन इसके बाद भी कमलनाथ ने कार्यकर्ताओं के जोश को देखकर पूरी ताकत के साथ भाजपा की रणनीति का सामना कर रहे है . वहीं कांग्रेस प्रत्याशी नकुलनाथ भी रोजाना जिले के अलग-अलग स्थानों में जनसभा में शामिल हो रहे है .

दल बदल की राजनीति से जनता हैरान - इस बार का लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा वह हर पैतरों का उपयोग किया जा रहा जिससे कमलनाथ के गढ़ को भेदा जा सके . कुछ समय से जिले में दल बदल की राजनीति हो रही है . लोकसभा चुनाव के कुछ दिन शेष है और कांग्रेस के नेताओं द्वारा दल बदल की राजनीति की जा रही है जिसके चलते जिले की जनता भी हैरान है कि आखिर यह क्या हो रहा है जो दो दिन पहले कांग्रेस प्रत्याशी नकुलनाथ के लिए वोट मांग रहे थे अचानक भाजपा में शामिल होकर बंटी साहू के लिए प्रचार कर रहे है . ऐसे नेताओं को आम जनता भी समझ रही है .

दिग्गज नेता कर रहे छिंदवाड़ा का दौरा - बता दे कि इस बार 400 पार का नारा लेकर और नरेन्द्र मोदी को एक बार फिर प्रधानमंत्री बनाने के नारे को लेकर भाजपा ने अपनी रणनीति बनाई है, पिछली लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश की भाजपा ने 28 सीट जीत ली थी लेकिन छिंदवाड़ा लोकसभा सीट पर कमलनाथ के पुत्र नकुलनाथ ने कब्जा कर लिया था इस बार मध्यप्रदेश की पूरी 29 सीट हासिल करने के लिए भाजपा के दिग्गज नेता छिंदवाड़ा लोकसभा सीट पर विशेष ध्यान दे रहे है .

विधानसभा चुनाव में भी भाजपा के केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, गिरीराज सिंह, नितिन गणकरी, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, देवेन्द्र फडवीस सहित , प्रदेश के तत्कालीन सीएम शिवराज सिंह चौहान , राज्य के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा, कैलाश विजयवर्गी ने छिंदवाड़ा का दौरा किया था लेकिन इसके बाद भी छिंदवाड़ा की सातों विधानसभा सीट कांग्रेस के खाते गई थी . लोकसभा चुनाव में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने छिंदवाड़ा का दौरा किया, प्रदेश के सीएम डॉ . मोहन यादव चार बार छिंदवाड़ा का दौरा कर चुके है वहीं राज्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को छिंदवाड़ा का प्रभारी बनाया गया है . इनके

साहब हम आपके साथ है चिंता मत करों

लोकसभा सीट में जिले का 75 प्रतिशत क्षेत्र में ग्रामीण मतदाता है यह मतदाता ही लोकसभा चुनाव में जीत हार का निर्णय करते है . कांग्रेस में इन दिनों दल बदल का खेल चल रहा है कुछ कांग्रेस के नेता भाजपा में शामिल हो गए है . विगत दिवस कांग्रेस के अमित सक्सेना जो जिला पंचायत उपाध्यक्ष है, ने कांग्रेस का साथ छोड़कर भाजपा के साथ हो गए, अब मतदाता और कार्यकर्ता इन नेताओं कुछ अलग ही अंदाज से देख रही है . बीती रात्रि कमलनाथ ने सिवनी रोड स्थित रामगढ़ी से लेकर अमित सक्सेना के क्षेत्र सारना तक रोड शो किया इस दौरान ग्रमीणों और कार्यकर्ताओं के द्वारा कमलनाथ का भव्य स्वागत किया . इसी दौरान के कुछ वीडियो सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहे है जिसमें ग्रामीण कमलनाथ को कह रहे है कि साहब आप चिंता मत करो जिसको जाना है जाने दो लेकिन हम मरते दम तक आपका साथ नही छोड़ेंगे . इन वीडियों को देखने से यह प्रतित हो रहा है कि दल बदलने वाले नेताओं से मतदाता काफी नाराज हो गए है .